

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये त्रयस्त्रिंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নारायणीये त्रयस्त्रिंशं दशकम् ॥

अम्बरीषोपाख्यानम्

বৈরস্বতাখ্যমনুপুত্রনভাগজাত -

নাভাগনামকনরেন্দ্রসুতোহম্বরীষঃ।

সপ্তার্ণরারূতমহীদযিতোহপি রেমে

৳৳সঙ্গিষু ৳৳যি চ মগ্নমনাস্‌সদৈ৳ ॥ 33.1 ॥

৳৳প্ৰীতযে সকলমের রিতন্৳তোহস্য

ভক্ত্যে৳ দে৳ নচি৳াদভূথাঃ প্রসাদম্।

যেনাস্য যাচনমূতেহপ্যভি৳ক্ষণার্থং

চক্রং ভ৳ান্ প্র৳িততার সহস্রধারম্ ॥ 33.2 ॥

স দ্বাদশী৳্ৰতমথো ভ৳দর্চনার্থং

৳র্ষং দধৌ মধুরনে যমুনোপকণ্ঠে।

পত্ন্যা সমং সুমনসা মহতীং রিতন্৳ন্

পূজাং দ্বিজেষু রিসৃজন্ পশুষষ্টিকোটিম্ ॥ 33.3 ॥

তত্রাথ পারণদিনে ভ৳দর্চনাণ্ঠে

দু৳াসসাহস্য মুনিনা ভ৳নং প্রপেদে।

ভোক্তুং বৃতশ্চ স নূপেণ প৳ার্তিশীলো

মন্দং জগাম যমুনাং নিযমান্৳িধাস্যন্ ॥ 33.4 ॥

৳াজ্জাহথ পারণমুহূর্তসমাণ্ঠিখেদা -

দ্বা৳ৈ৳ পারণমকারি ভ৳প৳েণ।

प्राप्तो मुनिस्तदथ दिर्यदृशा रिजानन्
स्फिप्यन् क्रुधोद्भुतजटो रिततान कृत्याम् ॥ 33.5 ॥

कृत्यां च तामसिधरां डुरनं दहन्ती -
मग्रेह्भिर्रीक्ष्य नृपतिर्न पदाच्छकम्पे।
९रद्वक्तुवाधमभिर्रीक्ष्य सुदर्शनं ते
कृत्यानलं शलभयन् मुनिमन्त्रधारीं ॥ 33.6 ॥

धारन्नशेषडुरनेषु भिया स पश्यन्
रिश्त्रत्र चक्रमपि ते गतरान् रिक्किम्।
कः कालचक्रमतिलङ्घयतीत्यपास्तः
शर्त्रं यथौ स च डुरन्तुमरन्दतैर ॥ 33.7 ॥

डूयो डुरन्निलयमेत्य मुनिं नमन्तुं
प्रोचे डुरानहमृषे ननु डुक्तदासः।
ङ्गानं तपश्च रिनयान्त्रितमेर मान्यं
याह्यम्भरीषपदमेर डुजेति डूमन् ॥ 33.8 ॥

तारत्समेत्य मुनिना स गृहीतपादो
राजाहपसृत्य डुरदम्भमसारनौषीं।
चक्रे गते मुनिरदादथिलाशिषोह्मै
९रद्वक्तिमागसि कृतेहपि कृपां च शंसन् ॥ 33.9 ॥

राजा प्रतीक्ष्य मुनिमेकसमामनाश्रान्
सम्भोज्य साधु तमृषिं रिसृजन् प्रसन्नम्।
डुकृत्वा स्त्रयं ९रयि ततोहपि दृत्तं रतोहडूत्
सायुज्याप च स मां परनेश पायाः ॥ 33.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रयस्त्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥